

पटना उच्च न्यायालय के अधिकारिता में
2017 का लेटर्स पेटेंट अपील संख्या-1311 में
2018 की दीवानी समीक्षा संख्या-327

गीता देवी, पुत्रीपरमा राम, पत्नी - मनोज कुमार राम, निवासी गाँव-बाराहोगा यदु , राम राय के टोला, थाना-गोरियाकोठी, जिला-सिवान वर्तमान निवास गाँव-चंडी, डाकघर-सिकंदरपुर, थाना-जी. बी. नगर, तरवाड़ा ब्लॉक-बरहरिया, जिला-सिवान की।

..... याचिकाकर्ता

बनाम

1. बिहार राज्य और अन्य
2. मिशन निदेशक, बिहार महादलित विकास मिशन, बिहार, पटना।
3. उप निदेशक, जिला कल्याण विभाग, सिवान।
4. उप विकास आयुक्त, सिवान।
5. जिला दंडाधिकारी, सिवान।
6. जिला कार्यक्रम अधिकारी-सह-जिला कल्याण अधिकारी, सिवान।
7. अनुमंडल अधिकारी, सिवान
8. प्रखंड विकास अधिकारी, बाराहरिया, सिवान।

..... विरोधी पक्ष

- सीमा अधिनियम, 1963-विलंब पर रोक-विलंब पर रोक-समीक्षा को समय के भीतर माना जाएगा।
- लेटर पेटेंट अपील-रिकॉर्ड के खिलाफ दी गई-वही त्रुटियां विद्वत् एकल न्यायाधीश के फैसले में भी थी जहां समीक्षा याचिका खारिज कर दी गई थी-इसलिए इस समीक्षा में

कहा गया, अदालत ने रिकॉर्ड के सामने कोई त्रुटियां स्पष्ट नहीं पाई-फिर भी वकील के आग्रह पर अदालत ने रिकॉर्ड की पूरी तरह से जांच की है-याचिकाकर्ता की ओर से स्पष्ट हेरफेर-इरादा किसी न किसी तरह से रोजगार को सुरक्षित करना था जो एक स्पष्ट प्रेरित धोखाधड़ी कार्य के अलावा और कुछ नहीं था-याचिकाकर्ता की काल्पनिक याचिका किसी भी सबूत या रिकॉर्ड पर किसी भी सामग्री पर आधारित नहीं थी-फिर भी आवेदक के वकील ने कारण को उचित ठहराने पर जोर दिया-अदालत पूर्व-चेतावनी वकील ने कहा-यह महसूस करने के बाद कि आग्रह से जुर्माना लग सकता है-आवेदक के वकील ने आवेदन वापस लेने का अनुरोध किया। (कंडिका-2,5,6)

- कर्तव्य और नैतिक आचरण अदालत के समक्ष मामलों के संचालन के मामलों में एक वकील-चर्चा-संदर्भ; ए. एस. कटलर द्वारा लिखा गया सचित्र लेख "एक वकील है जो एक अनुचित कारण का समर्थन करने के लिए बाध्य है"। सभी के लाभ के लिए पुनः प्रस्तुत किया गया अनुच्छेद-अदालत ने मामले में उचित कार्रवाई करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए था-वकील के अनुरोध के कारण-समीक्षा आवेदन को वापस ले लिया गया था। अनुच्छेद पुनः सभी के लाभ के हेतु प्रस्तुत किया-वकील के प्रार्थना के आधार पर-समीक्षा आवेदन के रद्द किया मानो हटा लिया गया हो। (कंडिका 7,8)

पटना उच्च न्यायालय के अधिकारिता में
2017 का लेटर्स पेटेंट अपील संख्या-1311 में
2018 की दीवानी समीक्षा संख्या-327

=====

गीता देवी, पुत्रीपरमा राम, पत्नी - मनोज कुमार राम, निवासी गाँव-बाराहोगा यदु , राम राय के टोला, थाना-गोरियाकोठी, जिला-सिवान वर्तमान निवास गाँव-चंडी, डाकघर-सिकंदरपुर, थाना-जी. बी. नगर, तरवाड़ा ब्लॉक-बरहरिया, जिला-सिवान की।

..... याचिकाकर्ता

बनाम

1. बिहार राज्य और अन्य
2. मिशन निदेशक, बिहार महादलित विकास मिशन, बिहार, पटना।
3. उप निदेशक, जिला कल्याण विभाग, सिवान।
4. उप विकास आयुक्त, सिवान।
5. जिला दंडाधिकारी, सिवान।
6. जिला कार्यक्रम अधिकारी-सह-जिला कल्याण अधिकारी, सिवान।
7. अनुमंडल अधिकारी, सिवान
8. प्रखंड विकास अधिकारी, बाराहरिया, सिवान।

..... विरोधी पक्ष

=====

उपस्थिति:

याचिकाकर्ताओं के लिए : श्री एस. अजीम, अधिवक्ता

श्री अक्षय लाल पंडित, अधिवक्ता

विरोधी पक्ष : श्री ज्ञान प्रकाश ओझा जीए 7

श्री गोपाल कृष्ण, जी ए 7 के सहायक सलाहकार

=====

कोरम: माननीय मुख्य न्यायाधीश

और

माननीय न्यायमूर्ति राजीव रंजन प्रसाद

मौखिक निर्णय

(द्वारा:- माननीय मुख्य न्यायाधीश)

तारीख:13-03-2019

2018 का अंतर्वर्ती आवेदन संख्या.6426

पक्षों के विद्वान वकील को सुनने के बाद, हम संतुष्ट हैं कि विलम्ब को पर्याप्त रूप से समझाया गया है। विलम्ब क्षमा आवेदन की अनुमति है। समीक्षा आवेदन को समय के भीतर माना जाएगा।

2018 की दीवानी समीक्षा संख्या 327

मामले को विस्तार से सुनने के बाद, हमने आवेदक के विद्वान वकील, श्री अजीम को बताया कि अभिलेख पर स्पष्ट रूप से कोई त्रुटि है , फिर भी उन्होंने जोर देकर कहा कि एल. पी. ए. में निर्णय अभिलेख के खिलाफ दिया गया है और वही त्रुटि विद्वान एकल न्यायाधीश के फैसले में मौजूद थी, जहां समीक्षा याचिका भी खारिज कर दी गई थी। हालांकि, श्री अजीम के आग्रह पर, हमने अभिलेखों की अच्छी तरह से जांच की है।

रिट याचिका के अभिलेख से हम पाते हैं कि याचिकाकर्ता गीता देवी ने अपनी दलीलों में स्पष्ट रूप से कहा है कि उन्होंने कोई मैट्रिक या इंटरमीडिएट प्रमाण पत्र दाखिल नहीं किया था और उन्होंने विकास मित्र के रूप में अपनी नियुक्ति का दावा केवल आठवीं कक्षा के प्रमाण पत्र के आधार पर किया था। राज्य ने एक जवाबी हलफनामा पेश किया और स्पष्ट रूप से अनुलग्नक-ई के रूप में याचिकाकर्ता द्वारा भरे गए आवेदन पत्र की एक प्रति

दर्ज की, जिस पर उसकी तस्वीर थी, जिस पर उसके भी हस्ताक्षर थे। उक्त आवेदन पत्र में, शैक्षिक योग्यता के कॉलम में, मैट्रिक और मध्यवर्ती का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। इस आशय का प्रतिपादन जवाबी हलफनामे के पैराग्राफ 8 में किया गया था।

याचिकाकर्ता ने एक प्रत्युत्तर दायर किया और उत्तर के पैराग्राफ संख्या.3,4 और 9 में, जवाब देते हुए कहा कि वह केवल 8वीं कक्षा उत्तीर्ण थी और मैट्रिक और इंटरमीडिएट के प्रमाण पत्र अंतर्वेष्टित किए गए थे और उनके प्रमाण पत्र नहीं थे। वास्तव में, उन्होंने मैट्रिक और इंटरमीडिएट प्रमाणपत्रों को अस्वीकार कर दिया, लेकिन उपरोक्त पैराग्राफ सहित पूरे प्रत्युत्तर में कहीं भी उन्होंने आवेदन पत्र को अस्वीकार नहीं किया है, जो राज्य द्वारा दायर जवाबी हलफनामे के पृष्ठ 60 पर अनुलग्नक-ई का पहला दस्तावेज है।

इसलिए, हम इस बात से अधिक आश्वस्त हैं कि आवेदन पत्र को आवेदक द्वारा मैट्रिक और इंटरमीडिएट के रूप में आवेदन पत्र में अपनी शैक्षिक योग्यता का धोखाधड़ी से उल्लेख करते हुए प्रस्तुत किया गया था, क्योंकि उसने उक्त आवेदन पत्र को संलग्नता के उद्देश्य से प्रस्तुत करने से इनकार नहीं किया है। हम यह भी जोड़ सकते हैं कि आवश्यक योग्यताएं मैट्रिक और इंटरमीडिएट थीं और यदि कोई महिला उम्मीदवार उक्त योग्यता के साथ उपलब्ध नहीं थी तो कक्षा-8 उत्तीर्ण उम्मीदवार के संबंध में इसमें छूट दी गई थी। आवेदन पत्र के साथ मैट्रिक और इंटरमीडिएट प्रमाण पत्र दाखिल करना।

हमारी राय में, आवेदक को छोड़कर किसी के लाभ के लिए नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने ऐसे प्रमाणपत्रों के आधार पर अपना रोजगार प्राप्त करने का प्रयास किया था। बाद में, ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपना रुख बदल लिया है और कक्षा-8वीं उत्तीर्ण प्रमाण पत्र के आधार पर अपनी योग्यता का दावा करना शुरू कर दिया है। दोनों में से किसी भी घटना में, यह आवेदक था जो जोड़-तोड़ का लाभार्थी था। इसलिए, इरादा किसी न किसी तरह उस रोजगार को सुरक्षित करना था जो उल्लेखनीय था लेकिन एक स्पष्ट रूप से प्रेरित धोखाधड़ी कार्य था, जिसका लाभार्थी स्वयं आवेदक था। यह दलील कि किसी और ने

आवेदन पत्र के साथ दस्तावेजों को अंतःस्थापित या सम्मिलित किया था, एक काल्पनिक याचिका है जो किसी भी साक्ष्य या अभिलेख पर किसी भी सामग्री पर आधारित नहीं है।

हमने श्री अजीम को पहले ही आगाह कर दिया था कि अगर हम अंततः यह मानते हैं कि याचिकाकर्ता की ओर से स्पष्ट हेरफेर किया गया था, तो हम मामले में उचित कार्रवाई करने का प्रस्ताव कर सकते हैं, फिर भी उन्होंने कारण को उचित ठहराने पर जोर दिया। हालाँकि, यह महसूस करने के बाद कि आग्रह करने पर जुर्माना लगाया जा सकता है, श्री अजीम ने श्री अक्षय लाल पंडित के साथ प्रार्थना की कि उन्हें आवेदन वापस लेने की अनुमति दी जाए।

विद्वान अधिवक्ता को मामलों के संचालन के मामलों में उनके कर्तव्यों और नैतिक आचरण के बारे में और याद दिलाने के लिए **न्यायालय के समक्ष दृष्टांत का उल्लेख करना पर्याप्त होगा।** ए. एस. कटलर द्वारा लिखा गया लेख "एक वकील है जो समर्थन करने के लिए बाध्य है एक अनुचित कारण"। उक्त लेख को सभी के लाभ के लिए नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

“ए. एस. कटलर का जन्म 1895 में न्यूयॉर्क के कोहोस में हुआ था। अठारह वर्ष की आयु तक उन्होंने ब्रुकलिन लॉ स्कूल में पढ़ाई की थी और सेंट लॉरेंस विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक और कानून में मास्टर की डिग्री प्राप्त की थी।

पेशे से न्यूयॉर्क के एक मुकदमे के वकील, श्री कटलर ऑस्टिन, टेक्सास में लॉ साइंस इंस्टीट्यूट में सह-मध्यस्थ और व्याख्याता के रूप में भी कार्य करते हैं।

उन्होंने कानूनी और अन्य प्रकाशनों में कई लेखों का योगदान दिया है और तीन पुस्तकें लिखी हैं: कटलर का इंस्टेंट केस क्वोटर, 1940; सक्सेसफुल ट्रायल टैक्टिक्स, 1949; और हाउ टू विन ए नेगलिजेन्स केस (हैरी ए. गेयर के साथ), 1956।

किसी भी वकील से अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों में से एक यह है कि वह उस मुवक्किल का बचाव कैसे कर सकता है जिसके मामले में वह विश्वास नहीं करता है। सवाल सबसे स्पष्ट जवाब का हकदार है, और नैतिकता में इस समस्या पर श्री कटलर की टिप्पणियाँ पेशे से परे उनकी रुचि और मूल्य का विस्तार करती हैं।

वकील का प्रश्न जिसने पिछले कुछ वर्षों में वकील को सबसे अधिक परेशान किया है वह है: “आप ईमानदारी से कैसे खड़े हो सकते हैं और उस व्यक्ति का बचाव कर सकते हैं जिसे आप दोषी मानते हैं?”

या, दीवानी मामलों के बारे में: “आप एक मामले का बचाव कैसे कर सकते हैं जब आप जानते हैं कि आपका मुवक्किल गलत है और वास्तव में मांगे गए पैसे का बकाया है?”

शुरुआत में हमें यह याद रखना चाहिए कि एक लोकतांत्रिक देश में सबसे खराब अपराधी भी कानूनी बचावकर्ता का हकदार है। यदि अपराध का आरोपी व्यक्ति एक वकील का खर्च वहन नहीं कर सकता है, तो अदालत बिना किसी लागत के उसका बचाव करने के लिए एक व्यक्ति को नियुक्त करेगी।

हालाँकि, कई वकीलों का मानना है कि बचाव के अधिकार का अर्थ है किसी भी साधन का उपयोग करना, जिसमें गवाही की प्रस्तुति भी शामिल है जिसे वकील गलत जानता है।

ऐसे वकील का तर्क है कि वकील को अपने मुवक्किल को दोषी ठहराने या अपने मुवक्किल को गलत ठहराकर दीवानी कार्रवाई का मूल्यांकन करने का कोई अधिकार नहीं है। ऐसे वकील का तर्क है कि इससे पहले कि कोई व्यक्ति किसी आपराधिक मामले में दोषी हो या दीवानी कार्रवाई में गलत हो, उस आशय का अदालत का निर्णय होना चाहिए। परस्पर विरोधी साक्ष्य पर लागू होने पर निर्णय कुख्यात रूप से अनिश्चित होते हैं।

इस स्थिति के समर्थन में, अधिवक्ताओं को सैमुअल जॉनसन द्वारा उनके प्रसिद्ध जीवनीकार, जेम्स बोसवेल द्वारा निम्नलिखित बोलचाल का पाठ करने में आनंद आता है:

बोसवेल: लेकिन आप उस उद्देश्य का समर्थन करने के बारे में क्या सोचते हैं जिसे आप बुरा मानते हैं?

जॉनसन: महोदय, आप नहीं जानते कि यह अच्छा है या बुरा, जब तक कि न्यायाधीश इसे निर्धारित नहीं करता। आपको तथ्यों को स्पष्ट रूप से बताना होगा ताकि आपकी सोच, या जिसे आप जानना कहते हैं, वह तर्क से खराब हो, आपके तर्कों को कमजोर और अनिर्णायक मानने से होना चाहिए। लेकिन साहब, यह पर्याप्त नहीं है। एक तर्क जो खुद को आश्वस्त नहीं करता है, वह न्यायाधीश को आश्वस्त कर सकता है जिससे आप आग्रह करते हैं; और यदि यह उसे आश्वस्त करता है, तो फिर क्यों, श्रीमान, आप गलत हैं और वह सही है। न्याय करना उसका काम है; और आपको अपनी राय में आश्वस्त नहीं होना चाहिए कि कोई कारण खराब है, बल्कि अपने मुवक्किल के लिए जितना हो सके उतना कहना चाहिए, और फिर न्यायाधीश की राय सुननी चाहिए। बोसवेल: लेकिन, महोदय, गर्मजोशी को प्रभावित नहीं करता है जब आपके पास कोई गर्मजोशी नहीं होती है, और स्पष्ट रूप से एक राय के रूप में दिखाई देते हैं जब आप वास्तव में दूसरी राय के होते हैं, तो क्या इस तरह के मतभेद किसी की ईमानदारी को प्रभावित नहीं करते हैं? क्या इस बात का कोई खतरा नहीं है कि एक वकील अपने दोस्तों के साथ संभोग में सामान्य जीवन में एक ही मुखौटा पहन सकता है?

जॉनसन: क्यों, नहीं, साहब। हर कोई जानता है कि आपको अपने ग्राहक के लिए गर्मजोशी को प्रभावित करने के लिए भुगतान किया जाता है, और इसलिए यह ठीक से कोई अपव्यय नहीं है: जिस क्षण आप बार से आते हैं, आप अपने सामान्य व्यवहार को फिर से शुरू करते हैं। महोदय, एक व्यक्ति अब बार की कलाकृति को समाज के

सामान्य समागम में नहीं ले जाएगा, जबकि एक व्यक्ति जिसे अपने हाथों पर गिरने के लिए भुगतान किया जाता है, वह अपने पैरों पर चलने पर अपने हाथों पर गिरता रहेगा।

यह तर्क दिया जाता है कि एक वकील जो कहता है वह उसके अपने मन और राय की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि उसके मुवक्किल की है। एक वकील को अपने विचार व्यक्त करने का कोई अधिकार नहीं है। वह केवल वही कह सकते हैं जो उनके मुवक्किल ने अपने लिए कहा होता अगर उनके पास अपना प्रतिनिधित्व करने का उचित कौशल होता। चूँकि एक मुवक्किल को दोषी साबित होने तक निर्दोष माना जाता है, एक वकील का यह ज्ञान कि उसका मुवक्किल दोषी है, उसे ऐसा नहीं बनाता है।

जैसा कि एक वकील ने कहा:

वकील वास्तव में केवल अपने मुवक्किल का मुखपत्र और प्रस्तावक होता है, और अंडरवर्ल्ड, अपने चरित्रात्मक रूप से ग्राफिक तरीके से, वास्तव में अपने वकीलों को मुखपत्र कहता है। यह अच्छी तरह से याद रखना चाहिए कि एक वकील को कभी भी वादी नहीं बनना चाहिए, जैसा कि था, और कभी भी अपने विचारों और राय को किसी मामले में नहीं डालना चाहिए।

यह पूछा जाता है:

एक वकील, या उस मामले के लिए कोई भी व्यक्ति, अपना अपराध साबित होने से पहले कैसे जान सकता है कि कोई व्यक्ति दोषी है या नहीं? "उचित प्रक्रिया की हमारी अवधारणाओं के तहत दोषी होने का अर्थ है जूरी या अदालत द्वारा मुकदमे के बाद इस तरह से निर्णय लिया जाना क्योंकि विशेष मामले में उचित प्रक्रिया की आवश्यकता हो सकती है। अपराध के आरोप में आरोपित व्यक्ति वकील से पूरी तरह से वंचित हो सकता है। समुदाय के सभी वकील उसे दोषी मान सकते हैं और उससे हाथ धो सकते हैं।

एक बार फिर:

अपराध का ऐसा पूर्वाग्रह लिंच भीड़ से कैसे अलग है, जो अपराध के बारे में इतना ही आश्वस्त है कि वह एक मुकदमे को एक बेकार समारोह मानते हैं? यह सच है कि बिना मुकदमे के लिंच भीड़ द्वारा फंसाया जाना पीड़ित के लिए बिना वकील के मुकदमे में पेश होने की तुलना में कुछ अधिक शर्मनाक हो सकता है, लेकिन, यदि बचाव पक्ष के वकील महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो वकीलों को लगता है कि वह करता है, तो अपराध का आरोप लगाने वाला व्यक्ति वास्तव में एक दुखी स्थिति में होता है यदि उसे कानून के बारे में अपने ज्ञान और एक अनुभवी अभियोजक का मुकाबला करने के लिए बुद्धि पर भरोसा करना पड़ता है जो दोषसिद्धि पर झुकता है और जिसकी सफलता को उसके दोषसिद्धि के प्रतिशत से मापा जाता है। एक अन्य वकील तर्क देता है:

एक मुवक्किल का मुद्दा उठाने पर, उसे अपने आदेश पर सभी संसाधनों के साथ प्रतिवादी के खलनायक को मिटा देना चाहिए। क्या उन तथ्यों को अभियोजन के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए जो उसके मुवक्किल के लिए प्रतिकूल हैं?

यदि वकील बेहतर तरीका देख सकता है और उन परिस्थितियों को स्वीकार कर सकता है जो उसे, विशेष रूप से आपराधिक मामलों में, कम का पालन करने के लिए मजबूर करती हैं (गलत दावों को बढ़ावा देने के लिए नहीं)। इस प्रकार वकील इस उक्ति के साथ रहता है: *“वीडियो मेलियोरा प्रोबोक डिटेरा सीक्वर”*

हम प्रस्तुत करते हैं कि इस तरह का रवैया पूरी तरह से एक वकील के विभाजित वस्त्रों की अनदेखी करता है। कर्तव्य केवल वह नहीं है जो वह अपने मुवक्किल को देता है। उतना ही महत्वपूर्ण वह कर्तव्य है जो वकील का न्यायालय और समाज के प्रति होता है।

मुवक्किल के प्रति उसकी वफादारी जितनी महान है, अदालत के एक अधिकारी के रूप में उसका पवित्र दायित्व और भी अधिक है। वह नैतिक रूप से अदालत के सामने उन दावों को प्रस्तुत नहीं कर सकता है जिन्हें वह गलत जानता है और उन्हें वरीयता से पेश नहीं करना चाहिए।

अमेरिकन बार एसोसिएशन के पेशेवर नैतिकता के सिद्धांत स्पष्ट, संक्षिप्त और स्पष्ट हैं: वकील का कार्यालय अनुमति नहीं देता है, यह किसी भी मुवक्किल, कानून के उल्लंघन या किसी भी तरह की धोखाधड़ी या धोखाधड़ी के लिए उससे बहुत कम मांग करता है। उसे अपने विवेक का पालन करना चाहिए न कि अपने मुवक्किल का।

वकील को दीवानी कार्य करने या बचाव करने से इनकार करना चाहिए जब यह आश्वस्त हो जाए कि इसका उद्देश्य केवल विरोधी पक्ष को परेशान करना या चोट पहुंचाना या उत्पीड़न या गलत काम करना है।

अदालत में उनकी उपस्थिति को उनके सम्मान पर एक दावे के बराबर माना जाना चाहिए कि उनकी राय में उनके मुवक्किल का मामला न्यायिक निर्धारण के लिए उचित है।

अमेरिकन बार एसोसिएशन प्रवेश की इस शपथ की सिफारिश करता है:

मैं किसी भी मुकदमे या कार्यवाही का परामर्श या रखरखाव नहीं करूंगा जो मुझे अन्यायपूर्ण लगे, और न ही कोई बचाव, सिवाय इसके कि मैं देश के कानून के तहत ईमानदारी से बहस योग्य मानता हूँ।

मुझे विश्वास दिलाए गए कारणों को बनाए रखने के उद्देश्य से मैं केवल ऐसे साधनों का उपयोग करूंगा जो सच्चाई और सम्मान के अनुरूप हों, और कभी भी किसी भी कृत्रिमता या तथ्य या कानून के

झूठे बयान से न्यायाधीश या जूरी को गुमराह करने की कोशिश नहीं करूंगा।

यह तभी होता है जब एक वकील वास्तव में मानता है कि उसका मुवक्किल निर्दोष है कि उसे उसका बचाव करने का बीड़ा उठाना चाहिए। अपराध के आरोपी व्यक्ति के खिलाफ हमारे सभी लोकतांत्रिक सुरक्षा उपाय किए जाते हैं ताकि किसी भी निर्दोष व्यक्ति को नुकसान न हो। दोषी प्रतिवादी, हालांकि वे ईमानदारी से और उम्मीद से बचाव के हकदार हैं, लेकिन उन्हें वकील द्वारा झूठी गवाही और निष्ठाहीन बयानों की प्रस्तुति का हकदार नहीं होना चाहिए।

यह बहुत स्पष्ट रूप से कहा जाता है कि एक वकील को अपने मुवक्किल का न्याय नहीं करना चाहिए और इस प्रकार अदालत के प्रांत पर आक्रमण किया जाएगा। 90 प्रतिशत से अधिक आपराधिक मामलों में एक वकील को पता होता है कि उसका मुवक्किल कब दोषी है या दोषी नहीं है। तथ्य आमतौर पर स्पष्ट और चौंका देने वाली सादगी के साथ सामने आते हैं।

यदि कोई वकील अपने मुवक्किल को दोषी जानता है, तो ऐसे मामले में यह उसका कर्तव्य है कि वह विस्तार करने वाले तथ्यों को निर्धारित करे और दया का अनुरोध करे जिसमें वकील ईमानदारी से विश्वास करता है। बहुत कम मामलों में जहां मुवक्किल के अपराध पर संदेह होता है और वकील ईमानदारी से मानता है कि उसका मुवक्किल निर्दोष है, उसे निश्चित रूप से अपनी क्षमता के अनुसार अपने मुवक्किल का पक्ष लेना चाहिए।

दीवानी मामलों में, संदेह का क्षेत्र निस्संदेह काफी अधिक है। एक अनुमान के अनुसार, एक वकील के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले मामलों में से केवल एक तिहाई मामले शुद्ध काले या शुद्ध सफेद होते हैं। केवल एक तिहाई मामलों में वकील को निस्संदेह पता होता है कि उसका मुवक्किल गलत या सही है। अन्य दो-तिहाई भाग में प्रमुख रंग भूरा होता है। अधिवक्ता का यह कर्तव्य है कि वह दूसरे पक्ष के

तथ्यों पर उचित विचार करने के बाद अपने पक्ष में मुवक्किल के कारण का मूल्यांकन करे। ऐसे मामले में, यह निश्चित रूप से अधिवक्ता का कर्तव्य है कि वह अपने मुवक्किल के मामले को अपनी क्षमता के अनुसार पेश करे।

जहाँ वकील कानून और तथ्यों का अध्ययन करने के बाद आश्वस्त हो जाता है कि उसका मुवक्किल सफल नहीं हो सकता है, उसका कर्तव्य निष्पक्ष और शीघ्रता से सबसे अच्छा समझौता प्राप्त करना है। दिन के हर घंटे, वकील एक प्रेरक होता है। उसकी सफलता को उस क्षमता से मापा जाना चाहिए जो उसके पास दूसरों को उसी प्रकाश में स्थितियों को देखने की क्षमता है जो वह करता है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि वकील को खुद को मूर्ख बनाना चाहिए। उसे इतना पक्षपातपूर्ण नहीं होना चाहिए कि वह सही तथ्यों पर पलक झपकाता है और आशा, पक्षपात या अपने स्वयं के स्वार्थ के गुलाबी रंग के चश्मे के माध्यम से स्थिति को देखता है।

एक वकील को सच्चाई और तथ्य की पूजा करनी चाहिए। उसे संदेहपूर्ण तर्क, संदिग्ध दावों, अविश्वसनीय या असंभव परिसर की दुष्ट आत्माओं को बिना किसी हिचकिचाहट के बाहर निकाल देना चाहिए।

वास्तव में, सबसे अच्छा प्रेरक वह है जिसने तथ्यों के सावधानीपूर्वक विश्लेषण के बाद पहले वास्तव में खुद को राजी किया है कि वह सही पक्ष में है। कुछ लोग दावा करते हैं कि वकीलों को अभिनेता होना चाहिए। यह केवल आंशिक रूप से सच है। एक अभिनेता अपने दिल में ऐसी कोई भावना के बिना बेहद दुख या परमानंद की खुशी को चित्रित कर सकता है। एक युवा अभिनेता किंग लियर की त्रासदी को अच्छी तरह से चित्रित कर सकता है, हालांकि उसका मेकअप हटाने के बाद उसका चेहरा बिना झुर्रियों वाला और बिना रंग का होता है। एक अच्छी अभिनेत्री एक बच्चे की मृत्यु पर एक प्यारी माँ की पीड़ा को चित्रित कर सकती है, भले ही अभिनेत्री

स्वयं एक ऐसी लड़की हो जिसका बच्चों के साथ एकमात्र संबंध अपनी बहनों और भाइयों के साथ रहा हो।

एक अच्छा वकील अभिनेता की तरह तेजी से बदलाव नहीं कर सकता है। सच्चा वकील तभी राजी हो सकता है जब वह ईमानदारी से मानता है कि वह सही है। तब सक्षम अधिवक्ता अजेय होता है। उनकी प्रेरक शक्ति इतनी शक्तिशाली है कि यह चट्टान और इस्पात को भेद सकती है। वास्तव में, यह इतना मजबूत है कि यह एक ऐसे न्यायाधीश का मन बदल सकता है जिसने पहले ही इसके विपरीत खोजने का फैसला कर लिया है।

अक्सर एक वकील ने अपने बेहतर फैसले के खिलाफ तर्क दिया है, खुद को अपने खिलाफ मनाने की अनुमति दी है। कभी-कभी वह जीत भी जाते हैं। फिर भी, आदमी चाहे कितना भी महान क्यों न हो, सच्चा वकील अलग नहीं हो सकता। यदि उसे अपने स्वयं के तथ्यों और अपने मुवक्किल के उद्देश्य की सच्चाई और धार्मिकता पर कोई विश्वास नहीं है, तो चाहे वह कितनी भी कोशिश करे और कितना भी अच्छा अभिनेता हो, उसके लेखा परीक्षकों को पता चलेगा कि वह खुद वास्तव में विश्वास नहीं करता है कि वह क्या कहता है। इस तरह से आपदा आती है।

हालाँकि, सच्चाई का पता लगाने की अपनी खोज में, वकील को खुद को सम्मोहित नहीं करना चाहिए। केवल इसलिए कि उसके मुवक्किल ने उसे एक शुल्क के लिए रखा है, वकील को खुद को अतिचारित होने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

अक्सर यह संदेह किया जाता है कि जितना अधिक सोना आप भाग्यशाली जिप्सी की हथेली को पार करेंगे, उतना ही बेहतर भाग्य हो सकता है जिसकी वह भविष्यवाणी करेगी।

हालाँकि, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वकीलों को जिप्सी की यात्रा और खानाबदोश स्थिति से ऊपर होना चाहिए। आँखों

में तथ्यों को देखने की उनकी शक्ति केवल शामिल शुल्क के आकार से प्रभावित या कमजोर नहीं होनी चाहिए।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस चर्चा में वकील हमेशा ईमानदारी और ईमानदारी के साथ काम करता है। उसकी पक्षपातपूर्ण स्थिति उसे अपने मुवक्किल के उद्देश्य में विश्वास करने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि, वह इतने निष्ठाहीन नहीं हैं कि तथ्यों को प्रस्तुत कर सकें कि वे झूठे हैं या ऐसी स्थिति ले सकें जिसमें वे ईमानदारी से विश्वास नहीं करते हैं।

एक वकील जो कागजात के एक सेट पर अपने नाम पर हस्ताक्षर करता है, उसे वास्तव में अपने मुवक्किल के कारण की ईमानदारी और निष्पक्षता की पुष्टि करनी चाहिए। अन्यथा, अनुचित उद्देश्यों के आधार पर हड़ताल और ब्लैकमेल मुकदमे अदालत के कैलेंडर को इस हद तक अव्यवस्थित कर देंगे कि मुकदमे में ईमानदार और निष्पक्ष कारणों से गंभीर रूप से देरी होगी।

यह वकील का उतना ही कर्तव्य है जितना कि वह ऐसे मामलों में भाग लेने से इनकार करता है जो सांचेदार हैं और केवल न्याय के पेड़ में विनाशकारी कवक वृद्धि को जोड़ सकते हैं, जितना कि यह झूठी गवाही के अधीनता में सहायता करने से इनकार करना है। एक वकील को कटाई और न्याय के अपरिहार्य फूल को जीवित रखने की दिशा में अपना योगदान देने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि माली अपने पौधों की देखभाल और पोषण करता है।

सभी वकील जानते हैं कि हर कोई सर्वश्रेष्ठ बचाव का हकदार है जो वह कर सकता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हर वकील को हर मामले को लेना चाहिए, जिसमें वे भी शामिल हैं जिनमें उसे अपने मुवक्किल के तर्क में कोई विश्वास नहीं है। उदाहरण के लिए, एक प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्ति, जो बार में बहुत सक्रिय है, कथित शराब तस्करों, जालसाजियों या बलात्कारियों का प्रतिनिधित्व करने से

इनकार करता है। क्या इस तरह के पूर्वाग्रहों के कारण उनकी निंदा की जानी चाहिए?

अधिवक्ता समुदाय में हजारों अन्य लोग हैं जो उन तीन अपराधों के अभियुक्त प्रतिवादियों का प्रतिनिधित्व कर सकते थे, जब वे वास्तव में निर्दोष थे।

कर्तव्य और व्यक्तिगत पसंद के मामले में भ्रमित नहीं होना चाहिए। एक वकील को दीवानी अदालतों में व्यभिचार के आरोपी पति या पत्नी का प्रतिनिधित्व करने का अधिकार है। उसे ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि वह ईमानदारी से यह विश्वास न करे कि उसका मुवक्किल आरोपित अपराध से निर्दोष है।

बेशक, जब एक वकील को अदालत द्वारा नियुक्त किया जाता है, तो उसे अदालत के प्रति अपने दायित्व को पूरा करना चाहिए। हालाँकि, इसमें झूठी या अनुचित गवाही प्रस्तुत करना शामिल नहीं है। न ही यह भेदभाव और असंवेदनशीलता को उचित ठहराता है, यहां तक कि जहां वकील प्रतिवादी की ओर से कार्य करने के लिए अदालत के आदेश को पूरा कर रहा है।

बल्कि, ऐसे अधिवक्ता का कर्तव्य है कि वह सभी प्रासंगिक तथ्यों और परिस्थितियों को प्रस्तुत करे। यदि वह दिखा सकता है कि अभियोजन पक्ष गलत है और उसका मुवक्किल निर्दोष है, तो यह उसका कर्तव्य है। यदि वह अपने मुवक्किल को दोषी जानता है, तो यह उसका कर्तव्य है कि वह केवल अपने मुवक्किल की ओर से विस्तार करने वाले तथ्यों और परिस्थितियों को प्रस्तुत करे।

कपट, धोखा और निष्ठाहीनता किसी भी मामले में वकील के मेकअप का हिस्सा नहीं होनी चाहिए।

आइए हम एक पल के लिए बोसवेल और जॉनसन के बीच आनंददायक संवाद पर लौटें। यह पढ़ना अद्भुत बनाता है। क्या यह इस लेख की शुरुआत में पूछे गए प्रश्न का वास्तविक उत्तर है?

क्या आप, श्रीमान वकील, या वास्तव में किसी भी इंसान में अदालत कक्ष में असहमति जताने और बार से आने पर "अपने सामान्य व्यवहार को फिर से शुरू करने" के लिए दुविधा है? क्या आप अपनी सोच के उस बेईमान हिस्से को वश में करके और अपने कार्यालय में लौटने पर एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में फिर से काम करना शुरू कर सकते हैं? अनिवार्य रूप से एक शरीर में निहित दो चरित्र लक्षण विलय करने की प्रवृत्ति रखते हैं। जाहिर है, विचलन और निष्ठाहीनता अंततः सत्यनिष्ठा पर विजय प्राप्त करेगी।

जैसा कि सैमुअल जॉनसन का तर्क है कि वह अपने हाथों या पैरों पर चलता है, वॉकर के चरित्र या आत्मा को प्रभावित नहीं कर सकता है। ईमानदारी से एक ऐसे कारण का अनुरोध करना जिसे वकील असत्य जानता है, उसके चरित्र को हानिकारक रूप से प्रभावित कर सकता है। जॉनसन के दिनों में जो भी स्थिति थी, बार में कोई कलाकृति नहीं होनी चाहिए। न ही किसी व्यक्ति को बार से आते ही "अपने सामान्य व्यवहार को फिर से शुरू करना चाहिए"। अपने कार्यालय और बार और समाज दोनों में वकील का सामान्य व्यवहार ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और पूर्ण निर्भरता वाले व्यक्ति का होना चाहिए।

यह तर्क कि एक वकील को अपने मुवक्किल के लिए एक मुखपत्र होना चाहिए, भले ही वह अर्थ अस्पष्ट हो, विशिष्ट है और सीमित सीमा तक ही तार्किक है। एक वकील को केवल अपने मुवक्किल के शब्दों और विचारों को दोहराने वाला एक यांत्रिक उपकरण नहीं होना चाहिए, चाहे वह कितना भी निष्ठाहीन या बेईमान क्यों न हो। बल्कि वकील को उन शब्दों को मुखपत्र के रूप में बोलने से इनकार कर देना चाहिए, जब तक कि उसके मुवक्किल के बयानों को सच्चाई और ईमानदारी से फ़िल्टर और शुद्ध नहीं किया जाता है।

कपट, धोखा और निष्ठाहिन्ता वकील के पुस्तकालय में शब्दकोश में पाए जा सकते हैं। लेकिन वे कभी भी वकील के दिल में नहीं पाए जाने चाहिए।”

हम मामले में उचित कार्रवाई करने के लिए आगे बढ़ते, लेकिन उनकी प्रार्थना के कारण, हम एतद्वारा समीक्षा आवेदन को वापस लेने के कारन खारिज करते हैं।

(अमरेश्वर प्रताप साही, मुख्य न्यायाधीश)

(राजीव रंजन प्रसाद, न्यायमूर्ति)

के. सी. झा/-

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।